16-9-67 ओम् शान्ति रात्री क्लास

बच्चे जो भी अच्छी रीती सृष्टी चक्र को जानते है। समझना चाहिये कि जो भी यह स्थापन हो रहा है इतना ही कल्प पहले भी स्थापन हुआ था। फिर करात कोई नही रहती आगे के लिये बच्चो को पुरुषार्थ करवाया जाता है। सिर्फ कोई को कहना है कि ऊंच ते ऊंच जो बाप है उनको याद करो तो अन्त मते सो गते हो जावेगी। बाप के पास पहुचं जावेंगे। तुम बच्चे जो जानते हो कि हमारा बाबा कौन है:, बाप ने कहा है कि हमको याद करने से से तुम पावन बन जावेंगे। ऊंच ते ऊंच बाप है पतित पावन। उन को याद करने से ही पावन बन जावेंगे। पावन दुनियां सतयुगी दुनियां को कहा जाता है। कलयुग है पतित दुनियां। यह बाते तुम सहज ही समझते हो। और किसी की भी बुधी में बैठेगा नही। समझेंगे ही नही। जब तक कि बाप को नही समझे जिसको कि अल्फ कहा जाता है। अल्फ को ही नही जाना तो कुछ भी नही जाना। बाप कहते है कि मेरे को जानने से तुम सब कुछ जान जावेंगे। मेरे ही द्वारा। अब तुम रचता और सृष्टी की आद मध्य अन्त को तुम जानते हो। और तो कुछ जानने की बात ही नही। कोई रचता नही रचाते है रिधी-सिधी दिखाते है। कितना भी कोई कुछ भी करे परन्तु फायदा ही क्या है? बाप को याद करने से ही हम शान्ति: धाम सुखधाम मे जा सकते है। बाकी जाक भी पुरुषार्थ करते है पैसे कमावेंगे साधुओं आद के पास भी पैसे बहुत है। यह नालेज तुम्हारे लिये तो रत्न है। बहुत ऊंची कमाई है। यह और कोई कब सिखलाये न सके। तुम बच्चो को बाप आकर समझाते है। बाप आवेंगे तो स्वर्ग की सुख देंगे। कुछ तो कार्य बाप करते होंगे ना। तुम जानते हो फिर से स्वर्ग का वर्सा देने पुरुषार्थ कराते है। मत देते है। इस लिए गाया हुआ है बेहद के बाप की गत मत न्यारी है। भक्ति मार्ग मे गाते है बाबा आप आवेंगे तो हम उस एक की मत पर चलेंगे। और तुम जानते भक्ति तो आधा कल्प से चली आई है। द्वापर से शुरु होती है। सिढी मे भी लिखना चाहिए यह वेद उपनिषद आद सब वहां से शुरु होते है। कोई कुछ न समझते है तो बकते रहते है। वेद शास्त्र आद जो कुछ पढते है यह है परन्तु बकना। फायदा कुछ भी नहीं। तब बाप कहते है परन्तु क्यों बकते हो। अनकंडर बात को परन्तु कहा जाता है। भक्ति फिर मिलता है ज्ञान। तुमको कितनी खुशी होती है। ज्ञान सागर बाप हमको ज्ञान देते है। सदगति कहा जाता है स्वर्ग को। गति शान्ति धाम। सदगति फिर होती है दुर्गति। बच्चे समझते है गृहस्त व्यवहार मे रहना है। गृहस्त के लिए व्यवहार करना पडता है। इसके लिए पढना भी पडता है। आगे फिमेल सिर्फ घर का काम करती थी। पढाई का कोर्स अभी जानती है। क्योंकि फिमेलस भी बहुत नौकरियों मे रहती है। फिर वहां खराब भी बहुत होता है। बहन पर भी क्रिमनल आए नहीं हो सकती है। कड कनेशन वाले बहन मे कब क्रिमनल दृष्टि होती नहीं। दूसरे को देखते है भल बहन कहते है फिर भी दृष्टि चली जाती है। तुम सभी हो बहन-भाई। तुम्हारी कब भी क्रिमनल आए होनी न चाहिए। हरेक ऐसा कहता है। नई बाते है ना। यह भी जानते हो भक्ति और ज्ञान अलग है। ज्ञान से सदगति होती है, भक्ति से दुर्गति होती है। किसी भी समझाओ तो यहाँ से भक्ति शुरु होती है। फिर मि छोडी सभी की सदगति होती है। इतने थोडे बचते है। बाकि सभी को बाप आकर गति सदगति करते है। गति शान्ति धाम, सदगति सुख धाम को कहा जाता है। दुर्गति दुखधाम को भूलते जाओ। यह सभी कर्व दाखल होनी है। इन मे प्यार रखने से क्या फायदा। पुरानी दुनिया खतम हो जावेगी। यह कोई काम की नही है। इसमे रहते हुए जैसे कि देखते नहीं। इसको कहा जाता है बेहद का सन्यास। तुम जानते हो हम नई दुनिया के लिए तैयार हो रहे है। तुम बच्चों की मत और दुनिया से न्यारी है। जैसे ईश्वर की गत मत न्यारी है वैसे तुम्हारी भी न्यारी है। एक ही घर मे देखो बाप की मत अलग तो बच्चे की मत अलग। श्रेष्ट से श्रेष्ठ भगवान की श्रीमत मिलती है। ऊंचे ते ऊंच बाप है। काणा हो नहीं सकता। बाप के श्रीमत पर चलने वाले ही श्रेष्ट बनते है। तुम जानते हो हमारी आत्मा सतोप्रधान बन जावेगी फिर आकर शरीर धारण करेगी। वानप्रस्त माना वाणी से परे जाने का पुरुषार्थ करते है। अच्छा बच्चों को गुड नाईट।